Research Reinforcement | A Peer Reviewed International Refereed Journal | ISSN 2348-3857
Vol. 13, Issue 1 | May 2025 - October 2025 | pp. 92-96

धौलपुर जिले में मानव संसाधन विकास स्तर की असमानता का अध्ययन

डॉ. सीमा वर्मा

सहायक आचार्य, भूगोल
राजकीय महाविद्यालय, कालन्द्री, सिरोही (राजस्थान)

शोध सारांश

धौलपुर जिला राजस्थान का एक भौगोलिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से विविध क्षेत्र है, जहाँ मानव संसाधन विकास स्तर में उल्लेखनीय क्षेत्रीय विषमता पाई जाती है। इस शोध पत्र में धौलपुर जिले की विभिन्न तहसीलों में मानव संसाधन विकास के स्तर का विश्लेषण किया गया है, जिसमें भौगोलिक, मानवीय एवं सांस्कृतिक कारकों की भूमिका का अध्ययन किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट हुआ है कि जिले की वे तहसीलें, जहाँ मानव विकास सूचकांक के संकल मूल्य धनात्मक प्रकृति के हैं, उच्च मानव संसाधन विकास स्तर में आती हैं। इनमें धौलपुर तहसील (0.21) एवं सैपऊ तहसील (0.46) उच्च श्रेणी में सम्मिलित हैं। इन क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार एवं जीवन स्तर के चयनित सूचकांक अनुकूल स्थिति में पाए गए हैं। इसके विपरीत, जिन तहसीलों में मानव विकास सूचकांक ऋणात्मक या निम्न स्तर पर हैं, वहाँ विकास की स्थिति अपेक्षाकृत कमजोर रही है। जैसे राजाखेड़ा तहसील (-0.12), बसेड़ी (-0.18) एवं बाड़ी (-0.42) में मानव संसाधन विकास का स्तर निम्न पाया गया है। यह असमानता जिले में जनसंख्या घनत्व, सामाजिक ढाँचे, शिक्षा की उपलब्धता, स्वास्थ्य सुविधाओं एवं आर्थिक अवसरों की विषमता से उत्पन्न हुई है। अतः यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि धौलपुर जिले में मानव संसाधन विकास स्तर भौगोलिक परिस्थितियों, जनसंख्या वितरण और सामाजिक-आर्थिक कारकों से गहराई से प्रभावित है। परिणामस्वरूप, संतुलित मानव संसाधन विकास हेतु क्षेत्रीय असमानताओं को दूर कर समान अवसर एवं संसाधन वितरण की नीतियाँ अपनाना अत्यंत आवश्यक है।

संकेताक्षर—*मानव विकास, सूचकांक, विकास स्तर, संसाधन, मूल्य, अध्ययन*

प्रस्तावना

मानव संसाधन विकास स्तर—धौलपुर जिले में मानव संसाधन विकास स्तर के मापन के लिए प्रस्तुत किये गये शोध-पत्र में धौलपुर जिले में मानव संसाधन विकास स्तर की विषमता होना भौगोलिक अध्ययन की पुष्टि करता है। जिसके अध्ययन को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

शोध के उद्देश्य

- धौलपुर जिले के मानव संसाधन विकास का अध्ययन करना।
- मानव संसाधन विकास स्तर की विषमता का अभिज्ञान।

परिकल्पनाएँ

- आधारभूत सुविधाओं ने मानव संसाधन विकास को नियन्त्रित किया है।
- मानव संसाधन को आर्थिक विकास व सामाजिक स्तर ने प्रभावित किया है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन की पूर्णता के लिए मानवीय पक्ष अर्थात जनसंख्या के तहसीलवार आंकड़ों को तालिका के प्रदर्शन के बाद प्रतिशत इत्यादि सांख्यिकीय एवं गणितीय विधियों के द्वारा प्रतिशत, माध्य, प्रमाप विचलन आदि के साथ विकास स्तर

ISSN 2348-3857

को तालिका में प्रदर्शित किया है। प्राप्त मानव विकास स्तर को श्रेणी या वर्ग में विभक्त कर विश्लेषण किया है। क्षेत्रीय स्पष्टता को मानचित्र में दर्षाया गया है।

अध्ययन क्षेत्र

धौलपुर जिला राजस्थान के पूर्वी भाग में स्थित है। अंक्षाशीय विस्तार 26°12' उत्तर से 26°57' उत्तर तथा देशान्तरीय विस्तार 77°14' पूर्व से 78°16' पूर्व है। इसके उत्तर-पश्चिम में भरतपुर जिला, पश्चिम में करौली जिला, उत्तर एवं पूर्व में उत्तर प्रदेश तथा दक्षिण में चम्बल नदी इसे मध्य प्रदेश से अलग करती है। धौलपुर जिला मुख्यालय भरतपुर से 109 कि.मी. तथा आगरा से 54 कि.मी. दूर है। इस क्षेत्र का चयन मानव संसाधन विकास के लिए इसलिए किया गया है, कि यह क्षेत्र मानव संसाधन विकास के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्र है, साथ ही यह राजस्थान मध्य प्रदेश उत्तर प्रदेश का सीमावर्ती क्षेत्र है। यहाँ पर मानव विकास का अध्ययन बहुत आवश्यक है तथा शोधकर्त्री ने पूर्व में भी इस क्षेत्र पर शोध कार्य पूर्ण किया है, अतः मानव संसाधन विकास को आवश्यक पहलू एवं महत्वपूर्ण आवश्यकता समझते हुए भावी विकास योजनाओं के लिए मानव संसाधन विकास का अध्ययन महत्वपूर्ण समझा, इस लिए क्षेत्र का चयन किया गया है।

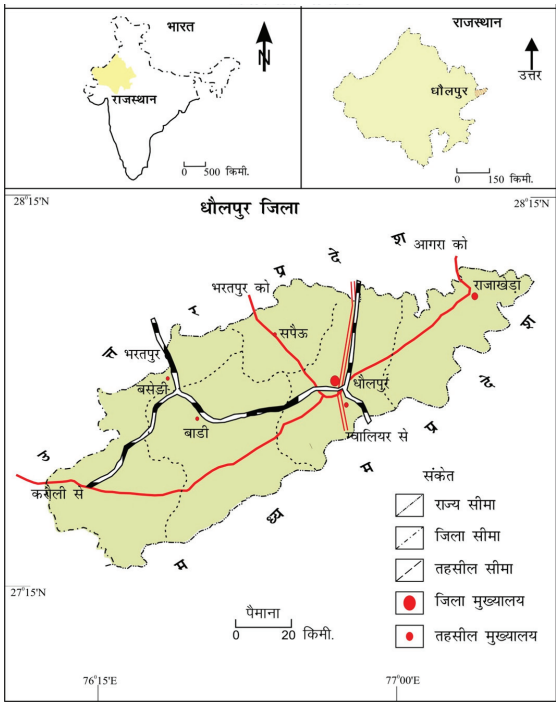

मानचित्र-1 : धौलपुर जिला अवस्थिति

चर मूल्यों का विश्लेषण

अध्ययन क्षेत्र में प्राप्त मानव विकास घटकों के सामूहिक मान, समानतर माध्य, प्रमाप विचलन प्राप्त किये हैं। यह किसी चर मूल्य की वास्तविक स्थिति धनात्मक या ऋणात्मक की स्थिति को स्पष्ट कराते है। अतः लिये गये चर मूल्यों के चयन की सामान्य विशेषता, प्रतिशत, संख्या, सूचकांक के रूप निम्न प्रकार है—

जनसंख्या घनत्व—जनसंख्या घनत्व प्रतिवर्ग किमी. रहा है। जिसमें सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व राजा खेड़ा तहसील में रहा है जबकि सबसे कम जनसंख्या घनत्व धौलपुर तहसील में रहा है। जनसंख्या घनत्व मानव संसाधन विकास के प्रमुख सूचकांकों में से एक है अतः इसका चयन किया गया है।

लिंगानुपात—मानव संसाधन विकास के लिए लिंगानुपात प्रमुख सूचकांक है। जिसकी समानता की आवश्यकता है और यह मानव संसाधन विकास को गति देने के कार्य करता है। जिससे असमानता की प्राप्त नगण्य रही है जबकि इसकी असमानता मानव संसाधन विकास को प्रभावित करने में सहयोग प्रदान करती है।

कुल साक्षरता—यह किसी क्षेत्र के शिक्षा के स्तर को प्रकट करती है। साक्षरता का मान प्रतिशत में लिया जाता है। जिसमें सात वर्ष से कम आयु के बच्चों की गणना इसमें शामिल नहीं रहती है। अतः धौलपुर जिले के मानव संसाधन विकास में इन सब का चयन किया गया है और यह प्रतिशत में अंकित रही है।

कुल ग्रामीण साक्षरता—इसके चयन द्वारा यह प्रभावित होता है कि इसका प्रभाव ग्रामीण क्षेत्र तक रहा है तथा मानव संसाधन विकास में यह किस प्रकार प्रभावित करती है तथा ग्रामीण साक्षरता अधिकांशतः विकास कार्यों को प्रभावित करती है अतः वास्तविक अध्ययन की प्राप्ति के लिए ग्रामीण साक्षरता का चयन किया है।

कार्यशील जनसंख्या—यह व्यावसायिक संरचना का प्रमुख आधार रही है। जिसमें कार्यशील जनसंख्या से जुड़ी हुई है। प्रमुख आर्थिक प्रक्रिया रही है। अध्ययन क्षेत्र धौलपुर जिलों में कार्यशील जनसंख्या प्रतिशत के अन्तर्गत चयनित की गई है।

सीमान्त कार्यशील—यह कार्यशील जनसंख्या के दूसरे स्तर की श्रेणी है। जिसमें कार्य करने की अवधि कम होती है। ये भी मानव संसाधन विकास को प्रभावित करते है।

कृषक प्रतिशत में—अध्ययन क्षेत्र कृषि प्रधान जिला है जिसकी अधिकांश अर्थव्यवस्था व मानव संसाधन विकास सर्वाधिक महत्त्व रखते है। कृषक अपनी आय के लिए कृषि प्रणाली को विकसित करता है तथा आय वृद्धि मानव विकास को इंगित करती है।

घरेलू श्रमिक—घरेलू श्रमिकों के अन्तर्गत पारिवारिक उद्योग में लगे व्यक्तियों की गणना की जाती है। घरेलू श्रमिक अपने कार्य के अनुसार विशेषताएँ रखते हैं। जिनमें विभिन्न घरेलू रोजगार संचालित रहते है। अतः इनकी भागीदारी भी मानव संसाधन विकास को प्रभावित करता है। अतः इनका सूचकांकों के रूप में चयन किया गया है।

अनुसूचित जाति—वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार धौलपुर जिले में अनुसूचित जाति का प्रतिशत तहसीलवार प्राप्त हुआ है। यह सूचकांक भी मानव संसाधन विकास को योगदान देते है अर्थात ये भी मानव संसाधन विकास के विकास को नियन्त्रित करने वाला प्रमुख सूचकांक है।

अनुसूचित जनजाति—यह जनजाति मानव विकास के अध्ययन के लिए आवश्यक है क्योंकि इनका स्वरूप या संख्या मानव संसाधन विकास को प्रभावित करता है अतः इसका चयन सूचकांक के रूप में किया गया है।

अतः इन्हें अध्ययन में शामिल किया गया है तथा प्राप्त परिणामों का विश्लेषण किया गया है। इस प्रकार 10 सूचकांकों को व्यक्तिगत श्रेणी में व्यवस्थित कर मानक विचलन कार्य पियर्सन महोदय की लघु रीति के अनुसार ज्ञात किये है—

प्रथम अवस्था—

$$\bar{x} = \frac{\sum x}{N}$$

$\bar{x}$ = व्यक्तिगत समंक श्रेणी का समान्तर माध्य

Σx = व्यक्तिगत समंक श्रेणी का योग

N = व्यक्तिगत समंक श्रेणी की संख्या

द्वितीय अवस्था—मानक विचलन ज्ञात करने के लिए कार्ल पियर्सन के प्रथम सूत्र का उपयोग किया है—

$$\sigma = \sqrt{\frac{\Sigma dx^2}{N} - \left(\frac{\Sigma dx}{N}\right)^2}$$

σ = मानक विचलन

Σd^2x = विचलनों के वर्गों का योग

Σdx = विचलन मूल्यों का योग

तृतीय अवस्था—इस अवस्था में मानक विचलन स्तर मूल्य ज्ञात किया गया है इसके लिए निम्न सूत्र का उपयोग किया गया है—

मानंकित मूल्य = $\frac{x - \bar{x}}{\sigma}$

चतुर्थ अवस्था—सकल मूल्य इस अवस्था में तहसीलवार सूचकांको का योग (+) धनात्मक या (-) ऋणात्मक में ज्ञात किया गया है।

पंचम अवस्था—इसमें सामूहिक सूचकांक ज्ञात करने के लिए सकल मूल्य में सूचकांक संख्या 10 का भाग दिया गया है जो भागफल प्राप्त हुए है वही सामूहिक सूचकांक है। मानव संसाधन विकास स्तर मानचित्र संख्या 2 में दर्शाया गया है।

सामूहिक सूचकांक ज्ञात करना—प्रत्येक तहसील के सभी 10 सूचकांकों के प्रमापीकरण मान को जोड़कर कुल योग में सूचकांकों की संख्या का भाग देते हैं।

सामूहिक सूचकांक = प्रमापीकरण के मानों का योग/ सूचकांकों की संख्या सामूहिक सूचकांक तालिका संख्या 1 के अंतिम कालम में + और - में दिये गये हैं।

मानव विकास स्तर का अध्ययन

अध्ययन क्षेत्र धौलपुर जिले के स्तर में असमानता पायी गई है। चयनित सूचकांकों के आधार पर सांख्यिकीय विधियों द्वारा प्राप्त मानों के अनुसार मानव विकास स्तर को क्रमबद्ध श्रेणीवार अध्ययन किया गया है। मानव विकास स्तर का अध्ययन तीन श्रेणियों में किया गया है जो इस प्रकार है—

अति निम्न मानव संसाधन विकास स्तर (-0.45 से कम सामूहिक सूचकांक)—इस मानव संसाधन विकास स्तर में धौलपुर जिले की बाड़ी तहसील व राजाखेड़ा शामिल किया गया है जिसका सामूहिक सूचकांक क्रमशः राजाखेड़ा तहसील -0.12, बाड़ी तहसील -0.42 रहा है।

जिनका संकल मूल्य -1.2 व -4.27 प्राप्त हुआ है। यहाँ पर अधिकांश सूचकांक ऋणात्मक स्थिति रखते हुए है। तालिका 1 के अध्ययन से स्पष्ट है कि यहाँ पांच सूचकांक ऋणात्मक स्थिति में रहे है। जिसका कारण संसाधन मानव विकास अतिनिम्न स्तर का रहा है। यहाँ पर चयनित सूचकांक औसत मूल्य से कम रहे है।

निम्न मानव संसाधन विकास स्तर (0.25 से कम सामूहिक सूचकांक)—यह स्तर मापन धौलपुर जिले की धौलपुर तहसील व बसेड़ी तहसील में रहा है। यहाँ बसेड़ी तहसील से कुछ सुधारात्मक सूचकांक पाये गये है। यहाँ पर धौलपुर तहसील का सामूहिक सूचकांक -0.21 तथा बसेड़ी तहसील का सामूहिक सूचकांक +0.18 प्राप्त हुआ है। यहाँ का संकल मूल्य के अन्तर्गत धौलपुर तहसील +2.16 तथा बसेडी का +1.79 प्राप्त हुआ है यह तालिका 1 तथा मानचित्र 2 से स्पष्ट है।

तालिका 1 : धौलपुर जिला मानव विकास (सूचकांक) स्तर मापन वर्ष 2024

तहसील/ सूचकांक	X_1	X_2	X_3	X_4	X_5	X_6	X_7	X_8	X_9	X_{10}	सकल मूल्य	सामूहिक सूचकांक
बसेड़ी	25-41	23-88	56-77	68-82	245	840	81-68	1-15	21-15	15-56	+1-79	+0-18
	-0-88	+1-85	+0-73	+0-46	-1-18	-0-46	+0-33	-1-09	+0-29	+ 1-74		
बाड़ी	27-55	15-52	55-97	64-71	303	830	78-48	1-21	21-93	7-97	-4-27	-0-42
	+ 0.36	-0.58	+0.60	-1.56	-0.87	-1.32	-1.25	-0.98	+0.82	+0.51		
सैपऊ	28.04	18.19	56.62	69.90	628	864	83.42	1.3	20.78	0.02	+4.66	+0.46
	+0.64	+0.19	+0.71	+0.98	+0.87	+1.60	+1.19	+5.38	+0.04	-0.76		
धौलपुर	24.49	15.87	40.62	69.56	728	852	82.72	2.31	17.87	0.20	+2.16	+0.21
	- 1.41	-0.47	-1.88	+0.82	+1.41	+0.56	+0.84	+1.17	-1.91	-0.73		
राजाखेड़ा	29.16	14.12	51.21	66.29	423	841	78.77	2.23	21.84	0.06	-1.27	-0.12
	+1.29	-0.98	-0.16	-0.75	-0.22	-0.37	-1.10	+1.01	+0.76	-0.75		
	26.93	17.51	52.23	67.85	465.4	845.4	81.01	1.71	20.71	4.76		
	1.72	3.43	6.15	2.08	185.55	11.62	2.02	0.51	1.48	6.20		

स्रोत—प्राप्त द्वितीय आँकड़ों से परिकलित

यहाँ पर ऋणात्मक की कमी रही है। जिसे कुछ प्रयासों द्वारा सुधारा जा सकता है। ताकि इन तहसीलों को निम्न श्रेणी से उच्च श्रेणी में लाया जा सकता है।

मानव उच्च विकास स्तर (+0.45 से अधिक सामूहिक सूचकांक)—इस विकास स्तर में जिले की एक तहसील आती है जो कि सैपऊ तहसील है। जिनका सामूहिक सचकांक सैपऊ +0.46 रहा है। इनका संकल मूल्य +4.66 रहा है। यहाँ मानव संसाधन विकास उचित स्तर का है जिसके कारण मानव विकास के सहयोगी सूचकांकों का धनात्मक रहना है।

तालिका 2 : धौलपुर जिला मानव विकास सूचकांकों मूल्य वितरण 2024

क्र.सं.	तहसील	सामूहिक सूचकांक	सकल मूल्य	मानव विकास स्तर मापन
1	बाड़ी	- 4.27	-0.42	अतिनिम्न
2	राजाखेड़ा	-1. 27	-0.12	निम्न
3	बसेडी	+1.79	+0.18	
4	धौलपुर	+2.16	+0.21	उच्च
5	सैपऊ	+4.66	+0.46	

ISSN 2348-3857

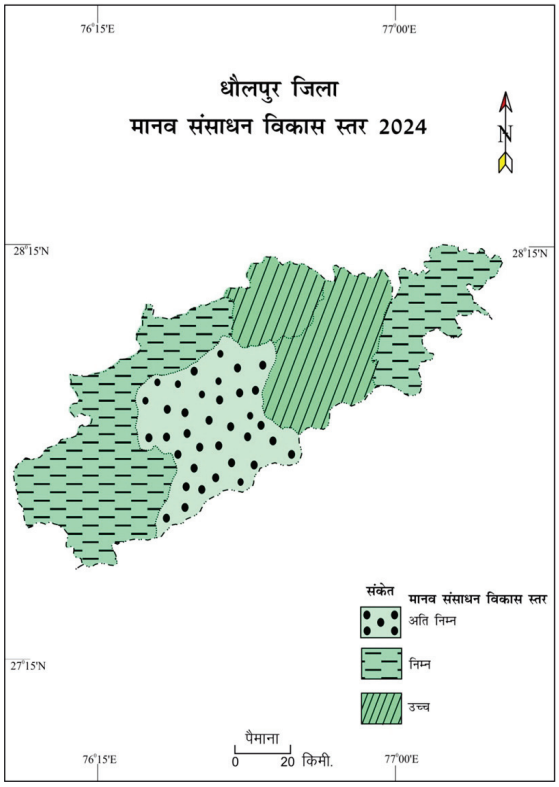

मानचित्र 2 : धौलपुर जिले के मानव संसाधन विकास स्तर (2024)

निष्कर्ष

अध्ययन से यह स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि धौलपुर जिले में मानव विकास स्तर भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों से गहराई से प्रभावित है। जिले की भौगोलिक दशाएँ जैसे जलवायु, स्थलाकृति, संसाधन वितरण एवं भूमि उपयोग की प्रकृति मानव विकास के विभिन्न सूचकांकों पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालती हैं। जिन क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों की कमी या भौगोलिक विषमता अधिक है, वहाँ मानव विकास का स्तर निम्न पाया गया है। शिक्षा और व्यावसायिक अवसर मानव विकास के प्रमुख निर्धारक रहे हैं। उच्च शिक्षा स्तर, तकनीकी कौशल और विविध रोजगार अवसरों ने कुछ तहसीलों में सामाजिक परिवर्तन और जीवन स्तर में सुधार को प्रोत्साहित किया है। जबकि कम विकसित तहसीलों में शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं और रोजगार के अवसरों की कमी ने विकास प्रक्रिया को धीमा किया है।

मानव विकास में क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करने हेतु आवश्यक है कि इन कम विकसित क्षेत्रों में सहयोगी कारकों की संख्या और प्रभाव को बढ़ाया जाए। इसके लिए नियोजन और नीति निर्माण के माध्यम से शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं, रोजगार सृजन और बुनियादी ढाँचे के विकास पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। यदि इन क्षेत्रों में सकारात्मक हस्तक्षेप किया जाए, तो जिले में मानव संसाधन विकास स्तर की समानता स्थापित की जा सकती है। इससे न केवल सामाजिक और आर्थिक असमानता घटेगी, बल्कि समग्र रूप से जिले का मानव संसाधन विकास संतुलित और सतत् रूप से उन्नत दिशा में अग्रसर होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. खुल्लर, आर.डी., मानव भूगोल तथा संसाधन एवं पर्यावरण, सरस्वती हाउस प्रा.लि. नई दिल्ली, 2004, पृ.सं. 45, 45
2. वर्मा, लक्ष्मीनारायण, अधिवास भूगोल, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, 1983, पृ.सं. 51, 63
3. बंसत, एस.सी., नगरीय भूगोल, मीनाक्षी पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1984, पृ.सं. 69, 71
4. भल्ला एल.आर.ए., राजस्थान का भूगोल, कुलदीप पब्लिकेशन, जयपुर, 1985, पृ.सं. 10, 11
5. अग्रवाल, एन.एल., राजस्थान में कृषि विकास, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 1972, पृ.सं. 410, 411
6. गुर्जर आर.के. एवं माथुर, पी.सी., पानी की खोज, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 1992, पृ.सं. 13, 14
7. भला एल.आर., राजस्थान सामान्य ज्ञान, कुलदीप, पब्लिकेशन, अजमेर, 2000, पृ.सं. 20, 21
8. महाजन गौतल, भूमिगत जल पुनर्भरण, आशीष पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1983, पृ.सं. 31, 32
9. शर्मा, एच.एस. एवं शर्मा, एम.एल., राजस्थान का भूगोल, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2006, पृ.सं. 121, 122
10. साईवाल स्नेह, राजस्थान का भूगोल, कॉलेज बुक हाएस, चौड़ा रास्ता, जयपुर, 2015, पृ.सं. 7.3, 7.4
11. कौशिक, एस.डी. एवं गौतम अलका, संसाधन भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, 2004-2005, पृ.सं. 91, 92
12. कमलेश, संतराम, बिलासपुर सम्भाग के कृषि विकास का स्तर, प्रकाशित शोध प्रबन्ध, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर, 1998, पृ.सं. 71, 72